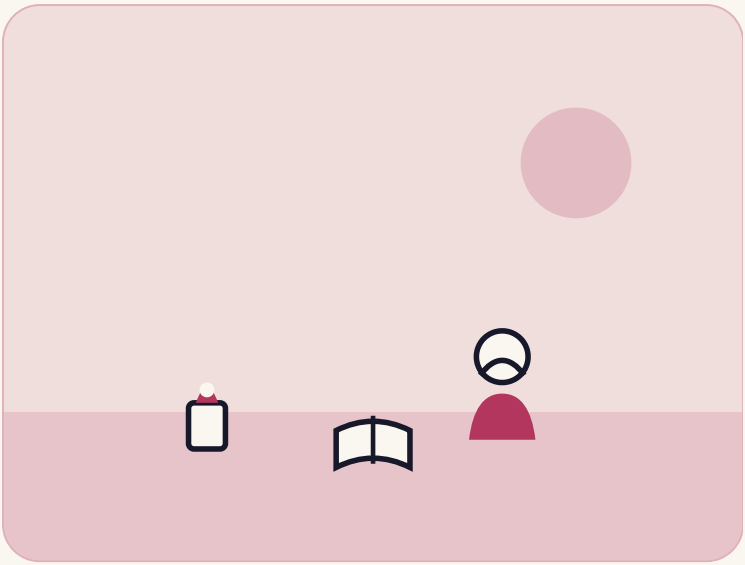

पाकिस्तान

अपनी छत पर स्कूल बनाने वाली लड़की

13 साल की उम्र में स्कूल में उनकी पिटाई हुई और अपमान किया गया। हार मानने के बजाय सिस्टर ज़ेफ़ छत पर चढ़ गईं और गरीब लड़कियों को मुफ्त पढ़ाना शुरू किया।

कहाँ गुजरांवाला

कौन सिस्टर ज़ेफ़, शिक्षिका और ZWEE की संस्थापक

कब 1997 से आज तक

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

1997 में पाकिस्तान के गुजरांवाला की एक कक्षा में तेरह साल की लड़की रो रही थी। उसका नाम रिफ़त आरिफ़ था। आज लोग उसे सिस्टर ज़ेफ़ के नाम से जानते हैं। उसने एक सीधा सा सवाल पूछा था। शिक्षिका ने गुस्से में जवाब दिया। शिक्षिका ने उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा और पूरी कक्षा के सामने उसका मज़ाक उड़ाया। ज़ेफ़ लाल गालों और आँखों में आँसू लिए घर लौटी।

उसके शहर में कई परिवारों का मानना था कि लड़कियों को किताबों की ज़रूरत नहीं होती। गरीबी के कारण माता-पिता अपनी छोटी बेटियों को घरों में काम करने भेजते थे। उस एक क्रूर घटना से ज़ेफ़ टूट सकती थी। लेकिन उसने अंदर एक आग जला दी। उसने खुद से एक शांत वादा किया। उसने कसम खाई कि उसके शहर में किसी भी बच्चे को पढ़ने की चाह के लिए कभी शर्मिंदगी नहीं झेलनी पड़ेगी।

वह अपने पुराने स्कूल को नहीं बदल सकती थी। इसलिए उसने एक नए तरह का स्कूल बनाने का फैसला किया। अगर कोई और प्यार से नहीं पढ़ाएगा, तो वह खुद पढ़ाएगी।

खुले आसमान के नीचे कक्षा

ज़ेफ़ सिर्फ़ तेरह साल की थी। उसके पास न पैसे थे, न कोई कमरा और न किताबें। लेकिन उसके घर की एक चपटी छत थी जो खुले आसमान के नीचे थी। वह सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गई और फर्श साफ किया। फिर उसने पड़ोस की कुछ ऐसी लड़कियों को बुलाया जिन्होंने कभी पेंसिल नहीं पकड़ी थी। उसने छत पर चटाइयाँ बिछाईं और उन्हें वर्णमाला सिखानी शुरू की।

धूल भरी गलियों में यह बात तेजी से फैल गई। कुछ ही हफ्तों में हर दोपहर दर्जनों बच्चे सीढ़ियाँ चढ़कर आने लगे। मुफ्त स्कूल चलाने के लिए कागज, पेंसिल और चॉक चाहिए थे। इन खर्चों को पूरा करने के लिए ज़ेफ़ ने सुबह सिलाई और दफ़्तर का काम शुरू किया। उसकी दिनचर्या उसके शरीर को सीमा तक थका देती थी।

वह तड़के उठती और पैसे कमाने के लिए आठ घंटे काम करती। दोपहर में वह छत पर जाती। वह बिना एक पैसा लिए चार घंटे बच्चों को पढ़ाती। रात में जब परिवार सो जाता, तो वह दीये की रोशनी में चार घंटे खुद पढ़ती। उसने कड़ी मेहनत की और अपने दम पर दो मास्टर डिग्री हासिल कीं।

तूफान, धमकियाँ और हिम्मत

खुले आसमान के नीचे पढ़ाना हर दिन कठिन था। गर्मियों में धूप छत की ईंटों को अंगारों जैसा बना देती थी। जब भारी बारिश होती, तो बच्चे गीली कॉपियों को कमीज में छिपाकर नीचे भागते। सर्दियों में ठंडी हवाएँ चलतीं। बच्चे गर्म रहने के लिए पतले स्वेटर में एक-दूसरे से सटकर बैठते थे।

मौसम से भी बुरा कुछ पड़ोसियों का गुस्सा था। कुछ पुरुषों ने उससे लड़कियों को पढ़ाना बंद करने को कहा। लोगों ने कहा कि गरीब बच्चों को पढ़ाना समय की बर्बादी है। ज़ेफ़ ने पीछे हटने से मना कर दिया। जब बारिश छत को भिगो देती, तो वह सभी बच्चों को एक छोटे कमरे में बैठा देती। उसने परेशान माता-पिता से प्यार से बात की। उसने समझाया कि पढ़ाई उनकी बेटियों को गरीबी से बचाएगी।

साल बीतने के साथ ज़ेफ़ का स्कूल बढ़ता गया। उसने बड़ी लड़कियों के लिए काम की कक्षाएं शुरू कीं। उसने सिलाई, कसीदाकारी और कंप्यूटर सिखाया। उसने युवतियों को आत्मरक्षा सिखाई ताकि वे बिना डर के सड़कों पर चल सकें। उसकी छत की छोटी कोशिश एक ऐसे समूह में बदल गई जिसने महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा किया।

> बच्चे सम्मान और आगे बढ़ने का माहौल पाने के हकदार हैं। मैंने अपने आसपास देखा तो ऐसा कोई स्कूल नहीं था, इसलिए मैंने सोचा कि मैं वही शिक्षिका बनूँगी।
>
> सिस्टर ज़ेफ़, अपने छत वाले स्कूल की शुरुआत पर

उनकी छात्राएं सरकारी परीक्षाओं में अच्छे नंबर लाने लगीं। जो लड़कियां कभी घरों में झाड़ू-पोंछा करती थीं, वे शिक्षिकाएं और दफ़्तर की कर्मचारी बन गईं। उनमें से कई छोटी लड़कियों को पढ़ाने के लिए छत वाले स्कूल में वापस लौटीं।

13	26	$1M
शुरुआत के समय उनकी उम्र	मुफ्त पढ़ाने के साल	2023 में जीता गया ग्लोबल टीचर प्राइज़

पेरिस के वैश्विक मंच पर

बीस से ज़्यादा सालों तक ज़ेफ़ ने शांत भाव से काम किया। उसने कभी तारीफ नहीं माँगी। उसकी छत की कक्षाएं धीरे-धीरे एक किराए के मकान में चली गईं। छब्बीस सालों में उसने एक बार में पाँच सौ से ज़्यादा बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी। उसने हज़ारों महिलाओं को काम के हुनर भी सिखाए।

2023 में दुनिया भर के शिक्षकों ने उनकी कहानी सुनी। निर्णायकों ने एक सौ तीस देशों के सात हज़ार से ज़्यादा नामों को देखा। नवंबर 2023 में सिस्टर ज़ेफ़ पेरिस में यूनेस्को के मंच पर खड़ी हुईं। उन्होंने दस लाख डॉलर का ग्लोबल टीचर प्राइज़ जीता।

जब उन्होंने सोने की ट्रॉफी उठाई, तो हॉल तालियों से गूंज उठा। पत्रकारों ने पूछा कि वे इनाम के पैसों का क्या करेंगी। उनका जवाब तुरंत आया। उन्होंने कोई बड़ी कार या शानदार घर नहीं खरीदा। उन्होंने गुजरांवाला में एक बड़ा नया स्कूल बनाने के लिए एक-एक डॉलर देने का वादा किया।

आज उनके शहर के पास दस एकड़ जमीन पर कक्षाएं बन रही हैं। जो लड़की कभी कक्षा के फर्श पर रोई थी, उसने अपने दर्द को उम्मीद में बदल दिया। उसने दिखाया कि जब कोई शिक्षक प्यार से सिखाता है, तो एक खुली छत भी महल से ज़्यादा चमक सकती है।

कब क्या हुआ

- **1997** तेरह साल की ज़ेफ़ ने अपनी छत पर पड़ोस की लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया।
- **2000** उन्होंने स्कूल बढ़ाया और मुफ्त सामान के लिए लंबी नौकरी शुरू की।
- **2010** रात में खुद पढ़कर ज़ेफ़ ने अपनी पहली मास्टर डिग्री पूरी की।
- **2016** छत की कक्षाएं उनकी संस्था के तहत एक पक्की इमारत में चली गईं।
- **2023** सिस्टर ज़ेफ़ ने पेरिस में दस लाख डॉलर का ग्लोबल टीचर प्राइज़ जीता।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

कई लोग स्कूलों को सुधारने की बातें करते हैं। ज़ेफ़ तेरह साल की एक लड़की थी जिसने बड़ा बनकर चोट पहुँचाने वाले के खिलाफ काम किया। उसके पास पैसे नहीं थे, फिर भी उसने एक खुली छत को कक्षा बना दिया। पच्चीस से ज़्यादा सालों तक उसने हज़ारों बच्चों को मुफ्त पढ़ाने के लिए दोहरी मेहनत की।

हमारी राय

सच्चा नेतृत्व पैसे या अनुमति का इंतज़ार नहीं करता। सिस्टर ज़ेफ़ ने अपने निजी दर्द को हज़ारों लड़कियों के लिए उम्मीद का दरवाज़ा बना दिया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 दर्द को मकसद बना लें

ज़ेफ़ ने किसी की क्रूरता से खुद को कड़वा नहीं होने दिया। उन्होंने वह दयालु शिक्षिका बनने की ठानी जो उन्हें कभी नहीं मिली।

यह आज़माएँ: अपनी किसी पुरानी निराशा के बारे में सोचें। जो आपने सीखा, उससे एक मददगार काम करने की योजना बनाएँ।

2 जो पास है उसी से शुरू करें

उन्होंने किसी इमारत का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने अपने घर की छत और कुछ चटाइयों से काम शुरू किया।

यह आज़माएँ: किसी ऐसे काम को देखें जिसे आप टाल रहे हैं। आज अपने कमरे में मौजूद चीज़ों से ही पहला कदम उठाएँ।

3 पहले अपनी मेहनत लगाएँ

उन्होंने बच्चों की कॉपियों और पेंसिलों का खर्च उठाने के लिए हर सुबह आठ घंटे काम किया।

यह आज़माएँ: दूसरों से मदद माँगने से पहले अपने काम में खुद समय और मेहनत लगाएँ।

4 धैर्य और सम्मान से सिखाएँ

वे बच्चों पर कभी नहीं चिल्लाईं। उन्होंने ध्यान रखा कि गरीब लड़कियों को कक्षा में पूरा सम्मान मिले।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते किसी को सलाह या राय देते समय विनम्र और उत्साह बढ़ाने वाली भाषा का इस्तेमाल करें।

साथ ले जाने वाली एक बात

एक खुली छत पर की गई छोटी-सी भलाई पूरी दुनिया में गूंज सकती है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

Global Teacher Prize
Sister Zeph: 2023 Winner

Teacher Magazine
Sister Zeph from Pakistan Wins the 2023 Global Teacher Prize

INEE
Sister Zeph from Pakistan Wins 2023 Global Teacher Prize

तथ्य-जाँच नोट: खबरों में शुरुआती कक्षाओं का ज़िक्र गुजरांवाला में उनके घर के खुले आँगन या चपटी छत पर चलने के रूप में मिलता है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।